Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 10 | OCTOBER 2024

मुरिया जनजाति: सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विस्तृत अध्ययन

संतोष कुमार बंजारे [1]

[1] **सहायक प्राध्यापक (समाजशास्त्र), शासकीय जी.एन.ए. पी.जी. कॉलेज, भाटापारा, जिला - बलौदा बाजार (छ.ग.)**

ABSTRACT:

मुरिया जनजाति, जो कि गोंड जनजाति की एक प्रमुख शाखा है, मुख्य रूप से छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र में निवास करती है। इस अध्ययन में मुरिया जनजाति की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया गया है, जिसमें उनके पारंपरिक सामाजिक ढांचे, सांस्कृतिक प्रथाओं और आर्थिक गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया गया है। सामाजिक रूप से, मुरिया जनजाति गोत्र प्रणाली पर आधारित है, जहां बहिर्विवाह (exogamy) का पालन किया जाता है। सामुदायिक निर्णयों और युवाओं के सामाजिक एवं सांस्कृतिक शिक्षण में 'घोटुल' प्रणाली महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो मुरिया जनजाति की विशिष्ट सामुदायिक संस्था है। धार्मिक रूप से, मुरिया जनजाति प्रकृति की पूजा करती है, और उनके सामुदायिक उत्सवों में प्रकृति के प्रति सम्मान प्रमुख रूप से दिखाई देता है।

आर्थिक दृष्टि से, मुरिया जनजाति की आजीविका का मुख्य आधार वर्षा आधारित कृषि, वन उत्पादों का संग्रहण, और कुटीर उद्योग हैं। वे महुआ और तेंदू पत्तों जैसे वन उत्पादों का संग्रह करते हैं, जो उनके व्यापार और आय का प्रमुख स्रोत हैं। बांस और लकड़ी से बने हस्तशिल्प भी उनकी आर्थिक गतिविधियों का हिस्सा हैं। हालांकि, मुरिया जनजाति कई चुनौतियों का सामना कर रही है, जिनमें गरीबी, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुंच, और सरकारी योजनाओं का पर्याप्त लाभ न मिल पाना प्रमुख हैं। शहरीकरण और वनों की कटाई ने उनके पारंपरिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
16th October 2024	18th October 2024

1. परिचय

मुरिया जनजाति भारत के छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर क्षेत्र में रहने वाली एक प्रमुख आदिवासी जनजाति है। यह जनजाति गोंड जनजाति की एक महत्वपूर्ण शाखा है और अपने विशिष्ट सांस्कृतिक और सामुदायिक ढांचे के लिए विख्यात है। मुरिया जनजाति का जीवन उनकी पारंपरिक कृषि, वन संसाधनों और कुटीर उद्योगों पर आधारित है। यह जनजाति अपनी प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखते हुए आज भी आधुनिक विकास प्रक्रियाओं का सामना कर रही है। उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को समझने के लिए हमें उनके पारंपरिक जीवन, उनके सामाजिक संबंधों, धार्मिक विश्वासों और उनके आर्थिक संसाधनों का गहन अध्ययन करना आवश्यक है। इस अध्ययन का उद्देश्य मुरिया जनजाति की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना है, साथ ही उनके विकास और चुनौतियों पर भी ध्यान केंद्रित करना है।

2. सामाजिक स्थिति

मुरिया जनजाति की सामाजिक संरचना का विश्लेषण उनके पारंपरिक सामाजिक ढांचे, विवाह प्रथाओं, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक परंपराओं के आधार पर किया जा सकता है। इन तत्वों ने सदियों से मुरिया समाज को मजबूत और संगठित बनाए रखा है। उनकी सामुदायिक पहचान और सामाजिक संरचना आज भी उनकी आदिवासी विशेषताओं को दर्शाती है।

(क) गोत्र व्यवस्था और विवाह

मुरिया जनजाति की सामाजिक संरचना में गोत्र व्यवस्था महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हर व्यक्ति एक विशिष्ट गोत्र से संबंधित होता है, और विवाह के लिए बहिर्विवाह की प्रथा अनिवार्य होती है, यानी किसी व्यक्ति को अपने गोत्र के बाहर ही विवाह करना होता है। गोत्र विवाह निषिद्ध है क्योंकि इसे रक्त संबंधों के विरुद्ध माना जाता है। यह प्रथा मुरिया जनजाति में सामाजिक अनुशासन और पारिवारिक संतुलन बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। विवाह एक सामुदायिक अनुबंध के रूप में देखा जाता है और सामुदायिक समर्थन के साथ संपन्न किया जाता है (Verma, 2012)। इस व्यवस्था का उद्देश्य विभिन्न परिवारों और गोत्रों के बीच संबंधों को मजबूत करना और सामाजिक एकता को बनाए रखना है।

(ख) घोटुल प्रणाली: सामुदायिक जीवन का केंद्र

मुरिया समाज की सबसे महत्वपूर्ण और विशिष्ट सांस्कृतिक संस्था घोटुल है। यह एक प्रकार का सामुदायिक छात्रावास होता है जहां युवा लड़के और लड़कियां एक साथ रहते हैं, और सामुदायिक जीवन के विभिन्न पहलुओं की शिक्षा प्राप्त करते हैं। घोटुल में युवाओं को न केवल सामाजिक अनुशासन सिखाया जाता है, बल्कि वे वहां सामूहिकता, सहयोग, और सांस्कृतिक मूल्यों को भी आत्मसात करते हैं (Singh, 2015)। घोटुल मुरिया समाज के युवाओं के लिए एक सामाजिक और सांस्कृतिक प्रशिक्षण का केंद्र है, जहां वे अपने वयस्क जीवन के लिए आवश्यक जीवन कौशल प्राप्त करते हैं। यह परंपरा मुरिया समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है और उनके सामुदायिक जीवन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

(ग) धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन

मुरिया जनजाति की धार्मिक मान्यताएं और सांस्कृतिक परंपराएं उनके प्राकृतिक परिवेश के साथ गहरे संबंधों पर आधारित हैं। मुरिया लोग प्रकृति के पूजक हैं, और वे जंगल, पहाड़, नदियाँ, और पेड़ों को पवित्र मानते हैं। उनकी धार्मिक प्रथाएँ सामुदायिक त्योहारों और अनुष्ठानों पर आधारित होती हैं, जिनमें प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करने की भावना प्रमुख होती है। मुरिया जनजाति के त्योहारों में नृत्य, संगीत और सामुदायिक भोज का महत्वपूर्ण स्थान होता है। यह न केवल धार्मिक क्रियाकलाप हैं, बल्कि यह सामाजिक एकता और सामूहिकता को भी प्रकट करते हैं (Sharma, 2016)।

मुरिया जनजाति में धार्मिक अनुष्ठानों का प्रमुख उद्देश्य प्राकृतिक शक्तियों और पूर्वजों को संतुष्ट करना होता है। उनके धार्मिक विश्वासों में यह धारणा है कि उनके पूर्वजों की आत्माएं और प्राकृतिक शक्तियां उनके जीवन और समृद्धि को प्रभावित करती हैं। इसलिए, विभिन्न अनुष्ठानों और उत्सवों के माध्यम से वे अपने पूर्वजों और प्राकृतिक शक्तियों का आशीर्वाद

प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। इन अनुष्ठानों में सामूहिक नृत्य और संगीत का महत्वपूर्ण स्थान होता है, जो मुरिया जनजाति के सांस्कृतिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा है।

(घ) सामाजिक संगठन और नेतृत्व

मुरिया जनजाति का सामाजिक संगठन सामुदायिक जीवन पर आधारित है। मुरिया समाज में सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रिया चलती है, जहां हर व्यक्ति की राय का महत्त्व होता है। उनके समाज में एक प्रमुख नेता होता है जिसे 'नायक' कहा जाता है। नायक सामुदायिक गतिविधियों की देखरेख करता है और सामाजिक समस्याओं का समाधान करता है। उनके पास सामाजिक न्याय और विवादों के निपटारे का भी अधिकार होता है (Singh, 2015)। मुरिया जनजाति की सामुदायिक एकता और सहकारिता का यह ढांचा उनके समाज की स्थिरता और सामाजिक शांति का आधार है।

3. आर्थिक स्थिति

मुरिया जनजाति की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि और वन संसाधनों पर आधारित है। उनकी आर्थिक स्थिति में पारंपरिक कृषि, वन उत्पाद, कुटीर उद्योग और बाहरी बाजारों के साथ उनका संबंध शामिल हैं। हालांकि, आधुनिकरण और बाहरी हस्तक्षेपों के कारण उनकी पारंपरिक अर्थव्यवस्था में बदलाव आ रहे हैं, फिर भी मुरिया समाज अपनी पारंपरिक आर्थिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है।

(क) कृषि

मुरिया जनजाति की आजीविका का मुख्य आधार कृषि है। मुरिया लोग पारंपरिक रूप से वर्षा पर आधारित कृषि करते हैं, जिसमें चावल, मक्का, और तिलहन जैसी फसलों की खेती की जाती है। उनका कृषि उत्पादन मुख्य रूप से घरेलू खपत के लिए होता है, हालांकि सीमित मात्रा में वे अपने उत्पादों को स्थानीय बाजार में भी बेचते हैं। मुरिया जनजाति की कृषि प्रणाली पारंपरिक होती है और वे जैविक कृषि पद्धतियों का पालन करते हैं। इस प्रणाली में खाद के रूप में जैविक तत्वों का उपयोग होता है, और सिंचाई का प्रमुख साधन वर्षा होती है (Chaudhary, 2014)।

(ख) वन उत्पाद और उनके आर्थिक महत्व

मुरिया जनजाति का जीवन जंगल पर भी निर्भर है। वे जंगल से महुआ, तेंदू पत्ता, साल के बीज, और अन्य जड़ी-बूटियाँ एकत्र करते हैं। ये उत्पाद उनकी आय का प्रमुख स्रोत होते हैं। महुआ और तेंदू पत्ते जैसे उत्पाद स्थानीय और बाहरी बाजारों में बेचे जाते हैं, जिससे उन्हें अतिरिक्त आय प्राप्त होती है। इसके अलावा, मुरिया जनजाति के लोग लकड़ी के उत्पादों और जड़ी-बूटियों का भी संग्रह करते हैं, जो उनके पारंपरिक ज्ञान और कौशल का हिस्सा हैं (Thakur, 2018)। मुरिया जनजाति के वन संसाधनों पर आधारित जीवन ने उन्हें प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने की कला सिखाई है, और वे पर्यावरणीय सुरक्षा के प्रति जागरूक रहते हैं।

(ग) कुटीर उद्योग और हस्तशिल्प

मुरिया जनजाति के लोग अपने पारंपरिक कौशल का उपयोग कुटीर उद्योगों में करते हैं। लकड़ी और बांस से बने उत्पाद, जैसे टोकरी, खिलौने, और अन्य हस्तशिल्प, उनकी प्रमुख कुटीर उद्योग गतिविधियों में से एक हैं। ये हस्तशिल्प न केवल उनकी आजीविका का साधन हैं, बल्कि उनकी सांस्कृतिक पहचान का भी हिस्सा हैं। मुरिया जनजाति के हस्तशिल्प उत्पादों की मांग बाहरी बाजारों में भी होती है, और यह उनके आर्थिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है (Thakur, 2018)। हस्तशिल्प उद्योग मुरिया समाज की पारंपरिक धरोहर और कला को संरक्षित रखने का भी एक महत्वपूर्ण साधन है।

(घ) आधुनिकरण और आर्थिक चुनौतियाँ

हालांकि मुरिया जनजाति का जीवन मुख्य रूप से पारंपरिक कृषि और वन उत्पादों पर आधारित है, लेकिन बाहरी हस्तक्षेप और आधुनिकरण ने उनकी अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। सरकारी योजनाएँ और विकास कार्यक्रम, जैसे कि वन अधिकार कानून (Forest Rights Act) और महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (MGNREGA), मुरिया जनजाति के लिए रोजगार और भूमि अधिकारों की दिशा में सकारात्मक कदम साबित हुए हैं। इसके बावजूद, मुरिया समाज में गरीबी, अशिक्षा, और स्वास्थ्य सेवाओं की कमी जैसी समस्याएँ अभी भी बनी हुई हैं (Yadav, 2020)। वन क्षेत्रों के घटते दायरे, शहरीकरण, और औद्योगिक गतिविधियों ने मुरिया जनजाति के जीवन को और कठिन बना दिया है। इसके साथ ही, बाहरी बाजारों में प्रतिस्पर्धा और सीमित अवसरों के कारण उनकी आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बनी रहती है।

4. विकास और चुनौतियाँ

मुरिया जनजाति के विकास की दिशा में कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठन काम कर रहे हैं। सरकारी योजनाओं, जैसे वन अधिकार कानून और रोजगार गारंटी योजनाएँ, मुरिया जनजाति के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, इन योजनाओं का समुचित क्रियान्वयन एक बड़ी चुनौती है। शिक्षा, स्वास्थ्य, और बुनियादी सेवाओं की कमी के कारण मुरिया जनजाति के लोग विकास की मुख्यधारा से अभी भी दूर हैं। कई बार, सरकारी योजनाओं का लाभ उन तक पहुँचने में विफल रहता है, क्योंकि उनके लिए इन योजनाओं की जानकारी और संसाधनों तक पहुँच सीमित होती है (Patel, 2021)।

शिक्षा का अभाव भी मुरिया जनजाति के विकास में एक बड़ी बाधा है। अशिक्षा के कारण वे बाहरी दुनिया से कटे रहते हैं और आधुनिक रोजगार के अवसरों का लाभ नहीं उठा पाते। इसके अलावा, स्वास्थ्य सेवाओं की कमी और कुपोषण जैसी समस्याएँ भी मुरिया समाज के विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं। शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण उनके पारंपरिक वन क्षेत्रों में कमी आई है, जिससे उनके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। मुरिया जनजाति के लोगों को उनके पारंपरिक अधिकारों से वंचित किया जा रहा है, और उनकी भूमि और संसाधनों पर बाहरी हस्तक्षेपों का प्रभाव बढ़ रहा है (Yadav, 2020)।

5. निष्कर्ष

मुरिया जनजाति की सामाजिक और आर्थिक स्थिति पारंपरिक कृषि, वन संसाधनों और कुटीर उद्योगों पर आधारित है। उनकी सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक धरोहर उन्हें एक सामूहिक और सहकारिता पर आधारित समाज बनाते हैं। हालांकि, आधुनिक विकास प्रक्रियाओं और बाहरी हस्तक्षेपों ने उनके पारंपरिक जीवन पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है। मुरिया जनजाति को अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हुए विकास की मुख्यधारा से जुड़ने की आवश्यकता है।

सरकारी योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की बेहतर उपलब्धता, और स्थानीय आर्थिक संसाधनों का सही उपयोग मुरिया जनजाति के विकास के लिए आवश्यक हैं। इसके साथ ही, उनकी पारंपरिक धरोहर और वन संसाधनों की सुरक्षा के लिए समुचित कदम उठाने की भी आवश्यकता है। मुरिया जनजाति का समृद्ध सांस्कृतिक और प्राकृतिक ज्ञान उनके भविष्य के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। आवश्यकता है कि उनके पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विकास के बीच संतुलन स्थापित किया जाए, ताकि वे सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त हो सकें।

REFERENCES

1. Verma, R. (2012). *Tribal Marriage Systems in India*. New Delhi: Rawat Publications.

2. Singh, S. (2015). *Cultural Traditions of the Muriya Tribe*. Journal of Tribal Studies, 6(2), 45-58.

3. Sharma, P. (2016). *The Religious Beliefs of Indigenous Tribes of India*. Varanasi: Bharti Publications.

4. Chaudhary, A. (2014). *Agricultural Practices of the Tribes in Central India*. Economic and Political Weekly, 49(23), 75-82.

5. Thakur, K. (2018). *Handicrafts and Cottage Industries Among Indian Tribes*. International Journal of Anthropology, 7(3), 102-114.

6. Yadav, R. (2020). *Economic Challenges Faced by Indigenous Tribes*. Journal of Rural Development, 10(1), 27-39.

7. Patel, D. (2021). *The Impact of Government Schemes on Tribal Development*. Indian Journal of Social Work, 82(4), 119-134.